**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति

**विजयलक्ष्मी शास्त्री,** पी–एचडी., **मनोरमा पाण्डेय,** शोधार्थी, हिन्दी विभाग
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Authors**
**विजयलक्ष्मी शास्त्री,** पी–एचडी.
**मनोरमा पाण्डेय,** शोधार्थी
**E-mail :** vlshastricg@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/05/2025
Revised on : 10/07/2025
Accepted on : 19/07/2025
Overall Similarity : 00% on 11/07/2025

## शोध सार

*साहित्यकार समाज के प्रति संवेदनशील है, वह समाज को अपने लेखन के माध्यम से सदैव नई दिशा प्रदान करने का प्रयास करता रहता है। ऐसी ही साहित्यकार, प्रख्यात लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का हिन्दी जगत में आगमन से साहित्य में हलचल मच गई। आपने अपने कथा साहित्य में समाज में व्याप्त नारी जीवन, दलित चेतना, शोषण, अत्याचार आदि का यथार्थ रूप प्रस्तुत कर साहित्य में नूतन दिशा प्रदान की। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में स्त्री की प्रधानता पर अत्याधिक बल दिया या यूँ कहें कि स्त्री ही इनके साहित्य की केन्द्र बिन्दु बनी, जिनके संघर्षों की गाथा इन्होंने अपने लेखन साहित्य में कही। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यासों में केवल शोषित एवं पीड़ित स्त्री की बात नहीं की अपितु इनके उपन्यासों के स्त्री पात्र समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हुई प्रतीत होती है फिर वह चाहे 'अल्मा कबूतरी' की 'अल्मा', 'भूरी', 'कदम', 'बेतवा बहती रही' की 'उर्वशी', 'कस्तुरी कुण्डल बसै' की 'कस्तुरी', 'चाक' की 'सारंग', 'विजन' की 'नेहा', 'इदन्नमम' की 'मंदा' क्यों न हो समाज द्वारा शोषित होते हुये भी समाज के हित एवं कल्याण हेतु सदैव संघर्षशील स्त्री के यथार्थ रूप में उपस्थित रही । मैत्रेयी के स्त्री पात्र केवल घर के चार दिवारी तक ही सीमित नही अपितु एक लोक कल्याणकारी स्त्री के साथ–साथ राजनीति में सफल भागीदारी निभाती है।*

## मुख्य शब्द

*समाज, साहित्य, शोषण, संघर्ष, यथार्थ, दलित चेतना.*

''हमें गुलाम रखने वाले गुलाम अब आजाद होकर और भी बर्बर हो गये।''[1]

संघर्ष जीवन का अभिन्न अंग है, अपने अस्तित्व

को बनाये रखने के लिए संघर्ष करना ही पड़ता है। समय के साथ–साथ समाज में भी बदलाव हुआ किन्तु स्त्री के अस्तित्व की बात करे तो स्त्री निरंतर संघर्ष करती आ रही है वैदिक काल में स्त्रियों की उच्चतर सामाजिक स्थिति काल के परिवर्तन के साथ–साथ निम्न से निम्नतर होती चली गई। पितृसत्तात्मक पुरूष प्रधान समाज में स्त्री का सम्मान कहां विलोपित हो गया पता नही चला तब संघर्ष अनिवार्य हो गया, चाहे वह स्त्रियों के अधिकार के लिए हो या स्त्रियों के सम्मान के लिए। मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति में भारी गिरावट देखने को मिली। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, पर्दा प्रथा, बहु विवाह जैसी कुरीतियां समाज में व्याप्त थी। भक्तिकाल में कुछ जागरूक महिलाओं ने समाज में अलख जगाने की कोशिश की जिनमें संत कवियत्री मीराबाई अक्का महादेवी, जानाबाई इत्यादि शामिल थे। गुरूनानक देव जी ने भी महिलाओं को समान दर्जा का संदेश दिया। अंगेजी शासन काल मे भी सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह जैसी कुरीतियां विद्यमान थी, किन्तु राजाराममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फूले जैसे समाज सुधारकों ने स्त्रियों के उत्थान के लिए संघर्ष किया। आजादी के लिए अनेक स्त्रियों ने संघर्ष में साथ दिया। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर अंग्रेजो को पछाड़ा जिनका नाम इतिहास के पन्नों में अंकित है साथ ही एनी बेसेंट, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी, सरोजनी नायडु इत्यादि ने भी आजादी के दौर में अपना नाम इतिहास के पन्नों पर अंकित किया।

बीसवीं सदी के आरम्भ में सरोजनी नायडु मातृशक्ति का बयान करते हुए कहा ''याद रखो जो हाथ पालना झुलाते है वही दुनिया पर राज करते है।''[2] स्वतंत्र भारत में स्त्रियों को आगे बढ़ने का अवसर मिला चाहे वो शैक्षणिक, धार्मिक एवं राजनीतिक क्षेत्र क्यों न हो। आधुनिकता के आते आते शहरो की स्त्रियों को कुछ स्वतंत्र वातावरण मिला किन्तु ग्रामीण क्षेत्र की स्त्रियाँ आज भी स्वतंत्र परिवर्तन की मांग कर रही है। समकालीन महिला रचनाकारों ने अपनी लेखनी के द्वारा स्त्री के संघर्ष को उकेरा है जैसे मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, चित्रा मुदगल, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा इत्यादि ने अपने साहित्य में किया। इनमें मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री के जीवन में व्यतीत पीड़ा के साथ–साथ अपने अधिकारों से लड़ने के लिए तैयार स्त्री के विषय में बताया है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य की स्त्री पात्र न केवल अपने लिए ही संघर्ष नही दिखाती अपितु पितृसत्तात्मक समाज के विरूद्ध आवाज भी उठाती है।

मैत्रेयी स्त्री संघर्ष के प्रति अपनी व्यथा कहती है, ''विपन्न मानसिकता के दुमुँहे समाज में आज भी नारी वस्तु ! मात्र संपत्ति विनिमय की चीज ! काल के स्याह अंधेरों में भटकती त्रासद जिंदगी ! दुःख दर्दो की व्यथा–कथा जो उनकी ही नही कहीं मेरी अपनी भी हो गयी।''[3] समाज में आज भी स्त्रियां कहीं न कहीं पुरूष प्रधान सत्ता को मानने में विवश है, वे बाल्यावस्था पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र पर आश्रित है। इसका सफल उदाहरण मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'बेतवा बहती रही' की 'उर्वशी' का है जो अपने लालची भाई अजीत के दबाव के कारण पिता के उम्र के बरजोर सिंह से विवाह करती है और शारीरिक, मानसिक यातनायें झेलती हैं, उसी प्रकार बरजोर सिंह की माँ पुत्र के आगे झुक जाती है और जमीनी विवाद के कारण कई वर्षों से अपनी जेठानी से बात नही करती है। इसी प्रकार अल्मा कबूतरी की आनंदी भी अपने पुत्र पर आश्रित है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में जहाँ स्त्री शोषित दिखाई पड़ती है वही दूसरी ओर इदन्नमम की मंदा जिसका दैहिक शोषण होने के बावजूद भी अपने कदमों को पीछे नहीं करती और निरन्तर आगे बढ़ती रहती हैं तथा अपने पिता के अस्पताल में डॉक्टर लाने के सपने को पूरा कर क्रेशर मजदूरों को यातनाओं से मुक्ति दिलाकर समाज मे अलग पहचान बनाती है वही चाक की सारंग और झूला नट की शीलो भी अपनी अलग पहचान बनाकर समाज में एक नयी दिशा प्रदान करती है।

मैत्रयी पुष्पा ने साहित्य में स्त्री संघर्ष का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया। स्त्री की संघर्षशीलता को आपने अपने उपन्यासों के माध्यम से बताया है – 'कस्तुरी कुण्डल बसै' में 'कस्तुरी' एक स्वाभिमानी, सहनशील स्त्री है वह पढ़ना चाहती है किन्तु लालची भाई और माँ के द्वारा उसको आठ सौ चांदी के कलदार लेकर एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से उसका विवाह करा देती है। इसपर कस्तुरी के मनः स्थिति को आहत पहुचती है। मैत्रेयी जब डेढ़ वर्ष की होती है उसी समय कस्तुरी विधवा हो जाती है और घर की पूरी जिम्मेदारी उसके ऊपर आ जाती है कहती है ''मैने ब्याह नही करना चाहा था, किसी ने सुनी मेरी बात? मै भाई के ब्याह के बदले में किसी बुढ़े के साथ नहीं जाना चाहती

थी बस चुपके से बेच दिया मुझे। आज विधवा हो गयी मेरे साथ कौन है? चिंता है किसी को?''[4] कस्तुरी संघर्ष करती हुयी अपनी जिम्मेदारी से पीछे नही हटती वह ढाई कोस दूर पैदल चलकर अपनी पढ़ाई करती है और पढ़कर ग्राम सेविका बन जाती है। कस्तुरी के संघर्ष की कहानी लेखिका ने इस उपन्यास में बताया है। 'बेतवा बहती रही' की 'उर्वशी' भी संघर्ष के रूप में मुख्य नायिका का किरदार अदा करती है। उर्वशी विवाह के उपरान्त सुख भोगती ही है कि पति की मृत्यु हो जाने के बाद उसका सर्वस्व समाप्त हो जाता है। लालची भाई दस बीघा जमीन के लिए अपनी ही बहन का सौदा कर देता है। उर्वशी को मानसिक एवं शारीरिक यातनाये झेलनी पड़ती है। उर्वशी कहती है, ''भेड़ बकरियो के तरह बेच गऔ कसाई। जैस कछु रिश्ता संबध न होय बहन से।''[5] उर्वशी सहनशील स्त्री होने के साथ–साथ अपनी जिम्मेदारी को भी बखूबी निभाती है। अपने छोटे सौतेले पुत्र का विवाह उसकी विधवा भाभी से कराकर समाज में एक नई दिशा प्रदान करती है। पुत्री जन्म, अनमेल विवाह, दहेज, बेटी विक्रय इस उपन्यास में चित्रित है। 'इदन्नमम' उपन्यास में मैत्रेयी ने सोनपुरा एवं श्यामली गांव की महिलाओं के संघर्षों को समाज के समक्ष लाने का अथक प्रयास किया। मंदाकिनी के पिता के मृत्यु हो जाने के पश्चात् मां अपने बहनोई रतन यादव के साथ भाग जाती हैं रतन यादव मंदा की हत्या करवाना चाहता है क्योंकि पूरे संपत्ति एक मात्र मंदा हकदार होती है। मंदा मुँह बोले मामा द्वारा कुकर्म का शिकार होती हैं फिर भी मंदा अपने पिता के सपने को पूरा करने के लिए अस्पतालों में डॉक्टर लाने का प्रयास करती है और सफल भी होती है। ''मंदाकिनी जब से इस बात की अर्जी देकर आयी है कि हमारे गांव के अस्पतालों में डॉक्टर भेजा जाये, कोई न कोई राह चलते, गली नाँखते, पानी भरते घेर ही लेता है उसे और फिर एक ही सवाल कि मंदा कब आयेगा डाकधर? एक आयेगा या दो? कम्पोटर भी आयेगा। दवा–दारू भी''[6] मंदा क्रेशर मजदूरों को यातनाओं से मुक्ति दिला कर स्त्री संघर्ष का एक उदाहरण प्रस्तुत करती है। 'झूलानट' की 'शिलो' एक संघर्षशील स्त्री पात्र है वह कुप्रथा का विरोध करती है और सास द्वारा प्रताड़ित होने पर भी हार नहीं मानती निरंतर स्त्री संघर्ष का प्रतिरूप बनती है। 'चाक' की 'सारंग' भी स्त्री संघर्ष के प्रति उत्तरदायी हैं चाक अर्थात् घुमता हुआ पहिया जिस आकृति से गीली मिट्टी द्वारा ढाला जाये वैसे ढल जाता है। सारंग भी ऐसी ही स्त्री पात्र है जो चाक के भांति ही संवारी जाती है किन्तु संघर्ष दिखाती है।

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में बुंदेलखण्ड की विलुप्त होती कबूतरा जाति एवं जन्म–जात अपराधी कहे जाने वाली जाति का यथार्थ जीवन मैत्रेयी पुष्पा ने चित्रित किया है 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास तीन प्रमुख स्त्री पात्रों की व्यथा कथा है – भूरीबाई, कदमबाई एवं अल्मा। अल्मा एक पढ़ी लिखी कबूतरा जाति की स्त्री है जिसके पिता अध यापक पद पर आसीन होते है जिनकी पुलिस द्वारा हत्या कर दी जाती है। कदमबाई का पुत्र राणा से अल्मा का विवाह होने वाला होता है किन्तु उसकी भी हत्या हो जाती है और अल्मा सूरजभान जो लड़कियों का विक्रय करता है के चंगुल में फंस जाती है और धीरज की मदद से वहां से भागने में सफल होती है और समाजकल्याण मंत्री श्रीराम शास्त्री के घर पहुँच जाती है तथा पत्नी रूप में रहने लगती है और अन्त में राजनीति में कदम रखती हुई अल्मा शास्त्री के नाम से जानी जाती है। अल्मा में स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। ''अल्मा कबूतरी की नायिका अल्मा नहीं भूरी–कदम–अल्मा का समुच्चय है, जिसमें तमाम अन्य नारी पात्र सिमट जाते है। इस तरह कुल एक और एक ही नारी मूर्ति निर्मित होती है। अडिग, अविराम, अपराजेय, अविगलित पौरूष मूर्ति की तरह इस समुच्चय के कारण प्रतिष्ठित होती है अल्मा। यह नामकरण तक प्रतिकात्मक है अल्मा यानी आत्मा। इन औरतों के सिर्फ शरीर ही जुदा है। संघर्ष के परिदृश्य ही विलग है–लक्ष्य एक है। उस विभाजन के विरूद्ध जो अप्राकृतिक अवैज्ञानिक है। वह मर्द से बराबरी की होड़ नहीं करती, स्त्री की स्वभाविक भूमिका के अवतरण को स्वीकार कराने को प्रतिबद्ध है। वह ममता का तिरस्कार नही करती, स्नेह कोष को छीजने नहीं देती – 'पानी हो गई रे! औरत पानी की तरह ही तो सँकरी से सँकरी जगह में अपने आप को रमा देती है। हवा हो गई रे, हवा की तरह सबको छू लेती है। गंध बन कर आसमान तक उड़कर पहुँचेगी अल्मा।''[7]

मैत्रेयी पुष्पा ने जहां ग्रामीण एवं दलित स्त्री के संघर्ष के विषय में चर्चा की वहीं दूसरी ओर शहरी स्त्रियों की भी मानसिक एवं शारीरिक यातनाओं के संबंध में संघर्ष दिखाती है। स्त्री चाहे कितनी भी पढ़ी लिखी क्यों न हो आर्थिक रूप से कितनी भी मजबूत हो समाज पितृसत्तात्मक रूप से ही आगे बढ़ता है 'विजन' उपन्यास की कहानी

भी शहरी पढ़ी लिखी डॉक्टर 'नेहा' की कहानी है जो अपने पति द्वारा मानसिक यातनाओं को झेलती है बांझ होने पर समाज के ताने झेलती है। '' नारी की पूर्णता मातृत्व में है। यदि विवाह के बाद पर्याप्त काल व्यतीत होने के बाद भी संतान जन्म नहीं लेती तो नारी का सम्मान समाज में कम होने लगता है।'' समाज में विवाहित स्त्री का माँ बनना कितना आवश्यक बन जाता है यदि कोई बांझ हो जाये तो समाज उसे जीने नहीं देती। इस प्रकार स्त्री प्रारंभ से ही संघर्ष करती है। 'फैसला' कहानी की 'वसुमति' भी पढ़ी–लिखी स्त्री होने पर भी पति द्वारा मानसिक रूप से यातनाये झेलती है उसे गलत निर्णय लेने के लिये पति बाध्य करता है किन्तु अन्ततः अपने विवेक का उचित प्रयोग कर सही निर्णय लेती है और एक सफल प्रत्याशी चुनती है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों मे भी स्त्री संघर्ष देखने को मिलता है 'सिस्टर' एवं 'ललमनियाँ' में स्त्री स्वाभिमानी रूप दृष्टिगोचर है। 'चिन्हार' कहानी माता द्वारा बलिदान की कहानी है। 'बेटी' कहानी में बेटी दूध का कर्ज चुकाने वाली समाज में नई दिशा प्रदान करती है। 'तुम किसकी हो बिन्नी' में बिन्नी मातृ–स्नेह को तरसती बालिका के रूप में चित्रित है। ताला खुला है पापा कि नायिका बिन्दु भी जाति–पाति का विरोध कर दूसरे जाति के लड़के से प्रेम करने का साहस दिखाती है। इस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति समाज में एक नयी दिशा प्रदान करती है।

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं के इर्द–गिर्द घूमती है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी पात्र आज की नारी से कुछ अलग नहीं है, आज भी समाज में नारी को शोषण, दमन, अत्याचार, दहेज, घरेलू हिंसा झेलना पड़ता है। स्वतंत्र भारत में स्त्रियों को आगे बढ़ने का अवसर मिला क्योंकि सविधान निर्माता बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर ने स्त्रियों के हक के लिये आवाज उठायी तथा समानता दिलाने के लिये कार्य किया – ''1947 में हिन्दू स्त्रियों के अधिकारों के लिये हिन्दू कोड बिल पेश किया था। इस बिल में विवाह की आयु सीमा बढ़ाने, स्त्रियों को तलाक का अधिकार देने, मुआवजा तथा विरासत के अधिकार देने जैसे प्रावधान थे।''[8]

आज आजादी के इतने वर्षों बाद भी चाहे नारी शिक्षित हो या अशिक्षित उनका शोषण होता है चाहे वो शारीरिक रूप से हो या मानसिक रूप से। स्त्री किसी वस्तु की माँग नहीं करती अपितु उन्हें समाज में समान दर्जा मिले यही उनकी धारणा है वे समानता का अधिकार, समाज में समान रूप से जीवन जीने का हक चाहती है इसी संदर्भ में राधा कुमार का कहना है– ''नारी वादियों ने महसूस किया की समानता की अवधारणा को व्यापक बनना होगा ताकि किसी भी ढांचे की असमानता को चिन्हित करके मिटाया जा सके। इस दौरान पुरूषों से समानता की माँग पहले से थोड़ी कम महत्वपूर्ण हो गई और स्त्रियों द्वारा अपनी निजी जीवन पर उसके नियंत्रण के अधिकार को लेकर आवाजे उठने लगी। आर्थिक आत्मनिर्भरता इसका सबसे सशक्त पहलू था और इसके साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी समान अधिकारों की माँग ने जोर पकड़ा परन्तु इन सबसे उपर और महत्वपूर्ण थी महिलाओं की उनकी देह पर नियंत्रण की माँग।''[9]

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों की स्त्री पात्र यूं कहे की संघर्ष की मूर्ति है जो समाज के हित एवं कल्याण के लिये सदैव तत्पर रहती है पितृसत्तात्मक समाज में समान दर्जा पाने हेतु सदैव संघर्ष करती आ रही है वह किसी भी सत्ता की माँग नहीं करती है किन्तु वे समाज में समान अधिकार, समान दर्जा पाना चाहती है महादेवी वर्मा ने इस संदर्भ में कहा है ''हमें न किसी पर जय चाहिये, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिये, न किसी का प्रभुत्व। केवल अपना वह स्थान, वे स्वत्व चाहिये जिनका पुरूषों के निकट कोई उपयोग नहीं है परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग बन नहीं सकेंगे। हमारी जागृत और साधन संपन्न बहिने इस दिशा में विशेष महत्वपूर्ण कार्य कर सकेंगी इसमें संदेह नहीं।''[10]

## निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के पश्चात् कहा जा सकता है मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष का सटिक और यथार्थ चित्रण दिखाई देता है जो समाज को जागरूक करने का कार्य करता है जिसमें वर्तमान/समसामयिक समाज न केवल समानता का अधिकार पूर्ण रूप से लागू करे बल्कि सदियों से चली आ रही स्त्री का दोयम दर्जा समाप्त कर उसे अधिकारों की अधिकारिणी बनाये। ''आवश्यकता है, नये संदर्भ में नारी को नये सिरे से परिभाषित करने की

या मध्यकाल में खोई हुई प्राचीन काल की परिभाषा को वापस पाने की। नारीत्व जिसका अपना पृथक अस्तित्व हो अपना एक अहं हो, गौरव हो। अपना स्वाभिमान, अपनी उपयोगिता, अपनी सार्थकता हो।''[11]

## संदर्भ सूची

1. यशवंते, शोभा (2017) *मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन,* विकास प्रकाशन 311सी, विश्वबैंक बर्रा, कानपुर, संस्करण– द्वितीय, पृ. 26।
2. कुमार, राधा (2011) *स्त्री संघर्ष का इतिहास 1800–1990,* वाणी प्रकाशन, चतुर्थ संस्करण, जनवरी 2011, पृ. 11।
3. पटेल, कल्पना (2014) मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज, चिंतन प्रकाशन, 3ए/119,आवास विकास हंसपुरम्, कानपुर, संस्करण–प्रथम, पृ. 13।
4. मैत्रेयी, पुष्पा (2021) *कस्तुरी कुण्डल बसै,* राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. नई दिल्ली, संस्करण–पहला 2009, पांचवा 2021, पृ. 31।
5. मैत्रेयी, पुष्पा (2018) *बेतवा बहती रही,* किताबघर प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, पृ. 15।
6. मैत्रेयी, पुष्पा (2021) *इदन्नमम,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण– पहला 1999, आंठवा 2021, पृ. 189।
7. सिंह, विजय बहादुर (2016) किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 196।
8. जोशी, गोपा (2015) *भारत में स्त्री असमानता,* हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. 338।
9. कुमार, राधा (2014) *स्त्री संघर्ष का इतिहास,* वाणी प्रकाशन, पृ. 15।
10. वर्मा, महादेवी (2017) *श्रृंखला की कड़ियाँ,* लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 23–24।
11. यशवंते, शोभा (2017) *मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन,* विकास प्रकाशन 311सी, विश्वबैंक बर्रा, कानपुर, संस्करण– द्वितीय, पृ. 68।

********